महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर
स्थाई पंजीयन–पत्र

क्र. एफ–15 / (10 / 2010)अर्थशास्त्र–154 / शोध / मदसविवि / 70489 दिनांक: 17/6 /2014

श्रीमती रचना बोहरा,
पत्नी श्री कन्हैयालाल बोहरा,
एल–28 विवेकानन्द कालोनी,
अजय नगर, अजमेर

विषय:– स्थाई पंजीयन की सूचना।

विषयान्तर्गत प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के माध्यम से अग्रेषित आपका पत्र दिनांक 4.6.2014 जिसके द्वारा आपने इस कार्यालय के पृष्ठांकित पत्रांक 4635–36 दिनांक 5.4.2014 में वर्णित प्रवेश शुल्क और पंजीयन शुल्क की राशि जमा कराना सूचित किया है, के आधार पर विश्वविद्यालय के अध्यादेश 124.10 के अन्तर्गत निम्नांकित शोध शीर्षक पर शोध कार्य करने हेतु आपका स्थाई पंजीयन किया जाता है :–

स्थाई पंजीयन की दिनांक 11.3.2013 है।

अंग्रेजी में " Demographic scenario of India with special reference to Sex Ratio "
हिन्दी में " लिंगानुपात के संदर्भ में भारत का जनांककीय परिदृश्य "

Prasad

निदेशक (शोध)

DEMOGRAPHIC SCENARIO OF INDIA WITH SPECIAL REFERENCE TO SEX RATIO

लिगांनुपात के संदर्भ में भारत का जनांकिकीय परिदृश्य

REVISED

SYNOPSIS

Submitted to the

MAHARSHI DAYANAND SARASAWATI UNIVERSITY, AJMER

For the Award of Ph.D. in Economics

Submitted by :

Sapna Bohra

Under Supervision of :

Dr. Rashmi Bhargava

Lecturer; Government College,

Ajmer

सेवा में,

निदेशक महोदय (शोध),
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

विषयः– शोध प्रारूप समिति द्वारा दिनांक 11.03.2013 को दिये गये सुझावों के बाबत् में।

सन्दर्भः– NO. F-15/Res/RRC/ECO./MDSUA/8984, दिनांक 22.03.2013

मान्यवर,

उपरोक्त विषयान्तर्गत उल्लेख है कि दिनांक 11.03.2013 को शोध प्रारूप समिति के समक्ष मैंने अपना शोध प्रारुप प्रस्तुत किया, जिसमें शोध प्रारुप समिति ने कुछ सुझाव पत्र NO.F-15/Res/RRC/ECO./MDSUA/8984, द्वारा प्रेषित किये गये। मैंने उन सभी सुझावों की अक्षरशः अपने शोध प्रारुप मे सम्मिलित कर लिया है। इस पत्र के साथ में संशोधित शोध प्रारुप अवलोकनार्थ संलग्न है।

अतः आप से अनुरोध है कि शीघ्रताशीघ्र मेरा Ph.D. के लिए रजिस्ट्रेशन कर मुझे अनुगृहीत करें।

सधन्यवाद।

दिनांक 12/5/2013

भवदीय,

12/5/2013
Signature of the Candidate with Date

Signature of the Principal
with Date

Principal
Government College, Ajmer
13/5/2013

Signature of the Supervisor
with Date 12/5/2013

व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX-IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

1. शोधकर्त्ता का नाम (in English) : **SAPNA BOHRA**

(in Hindi) : सपना बोहरा

2. प्रस्तावित शोध का शीर्षक

(in English) : Demographic Scenario of India with Special Reference to sex ratio

(in Hindi) : लिंगानुपात के संदर्भ में भारत का जनांकिकीय परिदृश्य

3. स्थिति

अ.संस्था/विभाग जहां कार्य किया जाएगा : अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय अजमेर (राज)

ब. जांच का भौगोलिक क्षेत्र : भारत

4. प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना, महत्व, उद्देश्य (Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives) :-

स्त्री और पुरूष समाज निर्माण के दो परस्पर पूरक तत्व है, परन्तु समाज संचालन में एक की सक्रियता और दूसरें की बाध्यता जीवन के सतत् प्रवाह में गतिरोध पैदा न करें तो भी उसे कुंठित अवश्य करती हैं। स्त्रियों की समाज में निम्न स्थिति होने का प्रमाण स्वयं जनगणना के आंकड़े देते है कि जहाँ 1901 में लिंगानुपात 972 था वह 1921 में 955 व लगातार घटते हुए 1971 में 930 हो गया तथा आगे अंशतः बढ़ते हुए 2001 में 933 व 2011 में 940 हो गया जो कि 1901 की तुलना में काफी कम है, वहीं यदि यह लिंगानुपात (0–6) वर्ष की आयु समुह में देखें तो लगातार दशकीय जनगणना में घटते हुए 2001 में जहां 927 था वह 2011 में घटकर 914 हो गया। लिंगानुपात समाज में महिलाओं की स्थिति को दर्शाने वाला महत्त्वपूर्ण पेरामीटर (प्राचल) है। भारत की जनगणना में लिंगानुपात का उर्प्युक्त दृश्य देश की आधी आबादी की निम्न स्थिति व शिशु–कन्या वध का एक बड़ा प्रमाण है। समाज में नारी की आर्थिक, सामाजिक, व राजनीतिक स्थिति की दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो यह विदित होता है कि नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सम्पूर्ण में छोटा सा अंश ही क्यों न हो लेकिन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो कि सर्वविदित है।

महत्त्व (Importance):-

प्रस्तुत शोध में सामाजिक–आर्थिक चरों के माध्यम से अर्थव्यवस्था में लिंगानुपात की स्थिति को दर्शाया गया है। अध्ययन के माध्यम से लिंगानुपात का समष्टिगत रुप से चित्रण किया गया है। आर्थिक विकास के संदर्भ में

विभिन्न आर्थिक चरों के माध्यम से लिंगानुपात के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करते हुए लिंगानुपात का आर्थिक विकास पर प्रभाव दर्शाया जाएगा। रोजगार, महिलाओं, की श्रम–शक्ति में भागीदारी, तथा राष्ट्रीय आय आदि विभिन्न आर्थिक चरों का लिंगानुपात में साथ तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह ज्ञात किया जा सकेगा कि लिंगानुपात में परिवर्तन से इन पर क्या प्रभाव होगा ?, एवं इनका लिंगानुपात की स्थिति पर होने वाले परिवर्तनों की समझा जा सकेगा। महिलाओं के श्रम बाजार में भागीदारी हेतु कार्यशील जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण करते हुए प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को दर्शाते हुए संगठित व असंगठित क्षेत्रों में उनकी कुल रोजगार स्थिति भी स्पष्ट होगी जिससे यह ज्ञात किया जा सकेगा कि महिलाओं का आर्थिक विकास के किन क्षेत्रों में अधिक रूझान है, साथ ही राष्ट्रीय आय में उनके योगदान को भी समझा जा सकेगा। जिससे यह ज्ञात करना संभव हो सकेगा कि क्या महिलाओं कें आर्थिक विकास में भागीदारी से लिंगानुपात पर कोई प्रभाव होता हैं ? क्या ये चर लिंगानुपात में परिवर्तन हेतु सहायक है ? अतः शोध के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान का अध्ययन करते हुए देश के आर्थिक विकस में महिलाओं की आदर्शतम उपस्थिति बिन्दू का अनुमान लगाना संभव हो सकेगा। इस प्रकार शोध राष्ट्र निर्माण के आर्थिक पक्ष में लिंगानुपात की स्थिति को समझने में उपयोगी सिद्ध होगा।

सामाजिक विकास के संदर्भ में शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य चरों का प्रयोग किया जाएगां। शिक्षा के माध्यम से लिंगानुपात में होने वाले परिवर्तन तथा लिंगानुपात में परिवर्तन का शिक्षा परे होने वाले प्रभाव को जाना जा सकेगा।

शोध के माध्यम से लिंगानुपात का जन्मदर व मृत्युदर पर प्रभाव देखते हुए जनसंख्या वृद्धि पर लिंगानुपात का नियंत्रण समझा जा सकेगा। जनन क्षमता सम्बंधी विभिन्न मापों पर लिंगानुपात का प्रभाव जानने से यह अनुमान लगाया जा सके कि लिंगानुपात में परिवर्तन का जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण सम्भव है या नहीं ? इस प्रकार आर्थिक विकास तथा जनसंख्या प्रवृतियों को लिंगानुपात से संबंधित कर, एक लिंग आधारित जनांकिकीय संक्रान्ति मॉडल का निर्माण करने का शोधार्थी का प्रयास रहेगा। साथ ही आर्थिक–सामाजिक चरों के माध्यम से लिंगानुपात का मानव विकास सूचकांक (HDI) की स्थिति में सुधार हेतु योगदान समझने व तुलना करने में भी, कि महिलाओं की सामाजिक आर्थिक विकास में अधिक भागीदारी से मानव विकास सूचकांक की स्थिति में सुधार संभव है या नहीं ? जानने मे उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही मानव विकास सूचकांक में उच्च मूल्य प्राप्ति हेतु क्या लिंगानुपात सहायक हो सकता है या नही ? समझने में भी अध्ययन सहायक सिद्ध होगा। लिंग संबंधी विकास सूचकांक (GDI) तथा लिंग असमानता सूचकांक (GII) के निर्माण व परीक्षण हेतु भी अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

इस प्रकार उपर्युक्त विभिन्न स्थितियों के अध्ययन के साथ लिंगानुपात में कमी के कारणों व उसमें वृद्धि हेतु उपाय तथा सामाजिक–आर्थिक चरों का उपयोग इस हेतु किस प्रकार किया जाए ? सम्बन्धित सुझाव आगे के अध्ययनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगें।

उद्देश्य (Objectives) :-

4..1 भारत में लिंगानुपात की स्थिति का समष्टिगत रुप से अध्ययन करना।

4..2 लिंगानुपात को विभिन्न आर्थिक–सामाजिक चरों से सम्बन्धित कर तुलनात्मक अध्ययन करते हुए लिंगानुपात का आर्थिक–सामाजिक विकास पर प्रभाव दर्शाना।

4.3 लिंगानुपात का जनसंख्या वृद्धि पर प्रभाव समझाना।

4.4 महिलाओं का राष्ट्रीय विकास में योगदान दर्शाना।

4.5 लिंग सम्बन्धित विकास सूचकांक तथा लिंग असमानता सूचकांक का निर्माण एवं लिंगानुपात को जनसंख्या प्रवृत्तियों की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित कर एक उचित अर्थमीति मॉडल का निर्माण करना।

4.6 आर्थिक विकास में लिंगानुपात की आदर्शतम उपस्थिति का आनुभाविक परीक्षण करना।

4.7 लिंगानुपात के घटने के कारण व परिणामस्वरूप उत्पन्न स्थिति को समझते हुए घटते लिंगानुंपात को रोकने के माप व उपाय सुझाना।

5. प्रस्तावित शोध विषय पर अब तक किया गया कार्य (Review of Literature) :-

संयुक्त–राष्ट्र संघ ने 1946 में स्थापित 'स्त्रियों की सामाजिक स्थिति' संबंधी आयोग को पूरे संसार में स्त्रियों के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व शिक्षा के क्षेत्रों में अध्ययन करने का काम सौंपा गया था। तब से इस दिशा में अध्ययन आरम्भ हुआं। महिलाओं की स्थिति संबंधी संयुक्त राष्ट्र संघ में

आयोग के निर्देश पर भारत सरकार ने सन् 1971 में श्रीमती फूलरेणु गुह्या की अध्यक्षता में एक जाँच आयोग का गठन महिला–पुरुष के बीच भेदभाव संबंधी तथ्यों व कारणों की जाँच हेतु किया।

1980 में अमर्त्य सेन 'Missing women' वाद–विवाद के माध्यम से विश्व का ध्यान आकर्षित किया जिसमें उन्होंने आकलन किया कि विश्व में 100 मीलियन (लगभग 10 करोड़) महिलाएँ अपनी जीवन रक्षा के लिए असमान व्यवहार, असुविधा, बिना पहचान के और विभिन्न प्रकार की विषम परिस्थितियों में जीने के लिए जूझ रही है या यूँ हे कि जीने हेतू मजबूर है तथा इसी वजह से मृत्यु को भी अधिक संख्या में प्राप्त हो रही हैं। निःसंदेह जिसमें विकासशील देशों का एक बड़ा भाग शामिल है। **(Stephen Klasen,1994: Klasen and Claudia 2003)**

भारत में लिंगानुपात पर ज्यादातर उत्तर–दक्षिण राज्यों पर ही अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत दर्शाया गया है कि कन्या को आर्थिक बोझ समझे जाने की वजह से तथा पुत्र को आर्थिक मजबूरी प्रदाता व वंश वृद्धि में सहायक मानने के कारण भ्रुण–परीक्षण कर कन्या भ्रुण हत्या की जाती है, जिसका सीधा–प्रभाव लिंगानुपात पर पड़ता है। **(Dyson Moore;1983; Agarwal 1986 and Sen 2003)**

पुत्र को प्राथमिकता प्रदान करते हुए लिंग–परीक्षण कर गर्भपात कराने व कन्या को दहेज और विवाह संबंधी आर्थिक बोझ समझे जाने के कारण कन्या–भ्रुण हत्या से एशियाई देशों में लिंगानुपात घट रहा है, का निर्धारण करने से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययन किए गए है। **(D' Souza &Chen**

1980; Park &Cho 1995; Kynch & Sen 1983 and Das & Gupta 1987)

पुत्र को वंश–वृद्धि मे सहायक, परिवार में आर्थिक भागीदारी करने वाला, परिवार चलाने वाला, बुढ़ापे का सहारा संपंत्ति व खुन के रिश्तों को आगे बढ़ाने वाला मानने के कारण पुत्र प्राथमिकता देते हुए बाल–अनुजीवन में बालिका हत्या का कारण माना है। **(Bevik & Bilginsoy 2000)**

Visaniya (1969) ने दावा किया कि 'Eess Female Literacy' को लिंगानुपात के गिरने का मुख्य कारण है। तथा कन्या–भ्रुण हत्या, मातृत्व मृत्युदर, महिलाओं के साथ असमानता का व्यवहार महिला–मृत्युदर की अधिकता का मुख्य कारण है।

अन्य अध्ययनों में लड़कियों की स्वास्थ्य सुविधा तक पहुँच न होना अर्थात उन्हें स्वस्थ पोषण व उचित स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध न करवाए जाने, उनकी अधिक मृत्यु का कारण दर्शाया गया है। **(Basu 1992; Chen Haq and D' Souza 1981; Sengupta, 1983: Hill and Upchurch, 1995)** यद्यपि कुछ अध्ययन पोषण को लैगिंक विभिन्नता का नगण्य कारण मानते हैं।

Barbara Diane Miller (1989) ने 1961 व 1971 के जनगणना आँकड़ों का प्रयोग करते हुए भारतीय गाँवों में किशोर लिंगानुपात का परीक्षण किया। अब तक के अन्य अध्ययन भारत में लिंगानुपात परिवर्तन के विशेष संदर्भ में किये गये है। **(Klasen and Claudia 2003; S. Gosavi and R. Naik (2011)**

1971–2001 के जनगणना आंकड़ों का प्रयोग करते हुए घटते लिंगानुपात का परीक्षण व निरीक्षण करते हुए बताया गया है कि भारत में 15 बड़े राज्यों जहां शहरीकरण व अन्य सुविधा अधिक है तथा महिलाओं की अच्छी स्थिति होना माना गया है, को आर्थिक विकास तथा लिंगानुपात से संबंधीत कर घटते लिंगानुपात संबंधी निष्कर्ष निकाले गये है। **(Chakrabhorty &Lekha S. and Sinha, Darshy 2008)**

राजस्थान में भी इस दिशा में अध्ययन करते हुए, घटते लिंगानुपात की समस्याओं से संम्बन्धित सांख्यकीय परीक्षण किया गया है। **(M.R. Singariya 2012)**

6. अनुसंधान पहचान अंतराल (Research Gaps Identified in the Proposed field of Investigation) :-

वर्तमान तक के अधिकतर अध्ययन महिलाओं के सामाजिक अध्ययन पर आधारित है तथा उनकी दुर्बल स्थिति व कमजोर पक्ष की ओर ही, अधिक ध्यान केन्द्रीत किया गया है।

अतः प्रस्तुत शोध मे पूर्व अनुसंधानों के आलोक में विस्तृत दृष्टि रखते हुए महिलाओं के सबल पक्ष को उजागार करने का प्रयास किया गया है। शोध के माध्यम से भारत में लिंगानुपात की स्थिति को समझाते हुए घटते लिंगानुपात के कारण व परिणामस्वरुप समाज व अर्थव्यवस्था पर होने वाले प्रभाव के साथ लिंगानुपात मे वृद्धि हेतु सुझाव दिए जाएंगे। महिलाएँ समाज की वास्वविक शिल्पकार है। अतः शोधार्थी का प्रयास रहेगा कि महिलाओं का आर्थिक व

सामाजिक महत्त्व समझाते हुए विभिन्न आर्थिक–सामाजिक चरों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान की दिशा में अध्ययन करके नये मानक स्थापित करना।

7. महत्त्वपूर्ण परिकल्पना (Major Hypothesis) :-

7.1 क्या लिंगानुपात मे वृद्धि के परिणामस्वरुप जनसंख्या वृद्धि मे कमी संभव है ?

7.1.1 क्या लिंगानुपात मे वृद्धि शिशु–कन्या मृत्यु–दर के साथ ऋणात्मक रुप सें सम्बन्धित हैं ?

7.1.2 क्या लिंगानुपात जननक्षमता के साथ सकारात्मक रुप से सम्बन्धित है ?

7.2 क्या लिंगानुपात देश के सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ सकारात्मक रुप से सम्बंन्धित है ?

7.2.1 क्या लिंगानुपात और शिक्षा सकारात्मक रूप से सम्बन्धित हैं ?

7.2.2 क्या महिला श्रम–शक्ति में वृद्धि से परिणामस्वरूप लिंगानुपात में वृद्धि होती है ?

7.2.3 क्या लिंगानुपात राष्ट्रीय आय के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है ?

7.3 क्या लिंगानुपात में वृद्धि स्वयं महिला सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है ?

7.4 क्या लिंगानुपात HDI व GII के साथ सकारात्मक रूप से संम्बन्धित है?

8. अनुसंधान की विधि (Research Methodology) :-

प्रस्तुत शोध द्वितीयक संमको पर आधारित है। शोध में प्रयुक्त संमक मुख्यतः NFHS (National Family Health Survey), NSS (National Sample Survey), SRS (Sample Registration System), तथा जनगणना, योजना आयोग व UNFPA के अध्ययन से लिये गये है। शोध में ANOVA विश्लेषण का प्रयोग किया जाएगा। तथा चार्ट, सारणी व रेखाचित्रों के माध्यम से आंकड़ों चित्रात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध का अध्यायवार विवरणः–

1. प्रस्तावना।
2. घटता लिंगानुपात एवं सामाजिक–आर्थिक चरों का अध्ययन, संबंध व लिंग असमानता सूचकांक (GII) का विश्लेषण।
3. घटता लिंगानुपात का आनुभाविक परीक्षण –ANOVA विश्लेषण
4. घटते लिंगानुपात का कारण, प्रभाव।
5. निष्कर्ष एवं सुझाव।

9. सन्दर्भ (List of References Cited): -

Agarwal B. (1986) : "women Poverty and Agriculture Growth in India", Journal of peasant Studies, 13 (4); 165-220

Agnihotri. S.B. (1995) : Missing Females : A Disaggregated Analysis, Economic and Political Weekly, Vol. 30 (19), pp. 2074-84

Athreya, V. (2002) : Gender Survival in the Decade of Reforms : What does Census, The Indian Economic Journal , Vol, 50 (2) pp. 43

Basu Alka Malwade (1988) : How Economic Development Can overcome Culture ; Demographic Change in Punjab.

Basu, A.M. (1992) : "Culture, the Status of Women, and Demographic Behavior," Oxford-UK ; Oxford University Press.

Basu, A.M. (1999) : "Fertility Decline and Increasing Gender Imbalance in India, Including a Possible South Indian Turnaround," Development and Change, 30 (2) pp. 237-63

Berik, G. and Bilginsoy., C. (2000) : "Type of work Matters: Women's Labour Force participation and the child Sex ratio in Turkey," World Development, Vol, 28, No, 5, pp. 861-878

Chen, L.C. Haq, E and D' Souza, S. (1981) : "Sex bias of Food and Health care in rural Bangladesh," Population and Development Review, Vol . 7, No-1 pp. 55-70

Census of India 2011

Chakroborty, Lekha, S. and Sinha, Darshy (2006) : "Determinants of Declining Child Sex Ratio in India : An Empirical Investigation," Online at http:// mpra. Ub. uni-muen chen. de/7602/ MPRA pp. NO. 7602

D' Souza, S. and Lincoln C. Chen (1980) : "Sex Differences in

Mortality in Rural Bangladesh." Population and Development Review. Vol. 16, pp. 257-270

Dyson, Moore, M. (1983): On Kinship Structure, Female Autonomy and Demographic Behavior In India," Population and Development Review 9 (1)

Das Gupta, M. (1987) : "Selective Discrimination against Female Children in rural Punjab. India," Population and Development review, Vol. 13 No. 1 pp 77-100

3 Das Gupta, M. (2005) : "Explaining Asia's Missing Women : A new Look at the Data", Population and Development Review, 31 (3) 529-535

4 Dutt, G. & Mahajan, A. (2012) : "दत्त एवं सुन्दरम् भारतीय अर्थव्यवस्था", नई दिल्ली, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि.

5 Gosavi, s. and Naik, r. (2011 : " Declining Sex Ratio In India : Prospectus, Effects and Remedies," Vol.No.1 Issn 2277- 1166

Hill, K. and Dawn, U (1995) : "Gender Differences in Child Health : Evidence Frome the Demographic and Health Surveys," Population and Development Review, vol. 21 pp. 127-15

Hatti, N. Shekhar, T.v. (2004), "Live At Risk : Declining Child Sex Ratio in India", in India," Project lives at Risk: Descrimination of Female Children in Modern India, Funded by the Swedish Research Council Mimeo.

International Institute For Population Sciences (2007) "National Family Health Survey, India 2005-06"

Jain, R.S. and Jain, S.K. " जनसंख्या अध्ययन" रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर।

Kynch, J and sen, A. (1983) : " Indian Women : Well being and Survival", Cambridge Journal of Economics, Vol,7 (3-4)

Klasen, S, and Wink, C, (2003) : "Missing Women : Revisiting the Debate, "Feminist Economics, Vol. 9 (2-3) pp. 263-299

Mishra Aditya Kumar 'निबंध निकुंज', चाइस इण्टरनेशनल।

Miller, B.D. (1989) : "Changing patterns of Juvenile Sex Ratio in Rural India, 1961 to 1971", Economic and Political weekly, pp.1229-1236

Park,C.B. and Cho, N. (1995) : "Consequence of son Preference in a low Fertility Society : Imbalance of the sex ratio at Birth in korea", Population and Development Review, Vol. 21, No. pp. 59-84

Ramaiah, G.J., Chandrasekarayya, T. and Murthy, P.V (2011) : "Declining Child sex Ratio in India : Trends, Issues and Concerns", Asia Pacific Journal of Social Sciences, Vol. 111 (1) pp. 183-198

Sen, A and Sengupta, S. (1983) : "Malnutration of Rural Chldren and sex Bias," Economic and Political weekly, pp. 855-863

Sen A.K&.D,J. (1996) : "भारतीय राज्यों का विकास," राज्यपाल एण्ड सन्ज ए. कश्मीरी गेट, दिल्ली –6

Sen, A.K. (2003) : "Missing Women Revised", British Medical Journal 327 : 1297-8

Singariya, M.R. (2012) : "Determinants of Declining Child Sex Ratio in Rajasthan," Journal of Economics and Sustainable Development, Issn 2222-1700 (Paper) Issn 2222-2855 (Online) Vol. 3,No. 1,

Visaniya, P.M. (1969): " The Sex Ratio of the Population of India, "Census of India 1961, Monograph No. 10. Office of the Registrar General, India, New Delhi

12/5/2013
Signature of the Candidate with Date

Outline Approved

12/5/2013
Name and Signature of Supervisor with Date & seal.

व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. Sapna Bohra on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of mk knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outlince of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have 02 (guve bynbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of the candidate whose application is being forwarded for registration is 05 (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

12/5/2013

Signature of the Supervisor with date

व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Certified that the available facilitics will be extended to Shrk/Km./Smt. Sapna Bohra for research work if he/she is registered for Ph.D.

Principal
Government College, Ajmer

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

12/5/2013

13.5.2013

व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Head, Department with date